खण्ड - क

बहुविकल्पीय प्रश्न :

1. (ii), (i), (iv), (iii)

2. (c) चेचन्या और दागिस्तान

3. (d) अन्य देशों के साथ अनुकूल संतुलन बनाने की

4. (c) आंतरिक रूप से विस्थापित जन

5. (a) 1-(iii), 2-(iv), 3-(i), 4-(ii)

6. (a) अभिकथन (A), कारण (R) दोनों सही हैं, और (R) (A) की सही व्याख्या करता है।

P.T.O

7 →
⇒ (d) नेशनल कॉन्फ्रेंस

8
⇒ (b) 1950

9.
⇒ (c) भारत

10.
⇒ (a) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही है और कारण (R), (A) की सही व्याख्या करता है।

11.
⇒ (b) बेलग्रेड

12.
⇒ (a) मेघालय

Previous Pathshala

खण्ड - ख

13\. उ० 1970 में पूर्वी व पश्चिमी पाकिस्तान में चुनाव हुए। पिछले कुछ सालों से पूर्वी पाकिस्तान पर पश्चिमी पाकिस्तान की सरकार का दबदबा था, परन्तु 1970 के चुनावों में यहाँ 'अवामी लीग' के नेता 'शेख मुजीबउर्रहमान' ने सभी सीटों पर विजय प्राप्त की। शेख मुजीब ने फिर पूर्वी पाकिस्तान के लिए अधिक स्वायत्तता की माँग की।

14\. उ० वैश्विक सुरक्षा :-

"वैश्विक सुरक्षा से अभिप्राय उन खतरों से सुरक्षा से है, जो सिर्फ एक राष्ट्र को नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व को क्षति पहुँचाते हैं। ये खतरे मानवीय अस्तित्व पर चोट करते हैं।" इसे 'मानवता की सुरक्षा' भी कहते हैं।
वैश्विक सुरक्षा के अंतर्गत - आतंकवाद, महामारी, वैश्विक तापवृद्धि

P.T.O

आदि खतरों से सुरक्षा का प्रावधान है।

15.
उ० भारत में योजना आयोग द्वारा के.एन. राज की देखरेख में 1951-56 में प्रथम पंचवर्षीय योजना लागू की गई।
इसकी दो विशेषताएं निम्नलिखित हैं :-
(i) इस योजना के अंतर्गत कृषि पर ज्यादा जोर दिया गया;
(ii) इस योजना में बचत को बढाने पर भी जोर दिया गया। साथ ही बाँध निर्माण पर भी जोर दिया गया। इस योजना के दौरान भाखड़ा-नांगल परियोजना को विकसित किया गया।

16.
उ० भारत में विभाजन के बाद पहली बार चुनाव 1951-52 में हुए। भारत में विविधताओं व विशाल जनता के मौजूद होने के कारण यहाँ चुनाव करवा पाना मुश्किल लग रहा था। ऐसे में

कुछ आलोचकों ने तर्क दिए कि भारत में लोकतंत्र कायम नहीं रह सकेगा। परन्तु 1952 में चुनावों की सफलता के बाद यह पुरे विश्व में लोकतंत्र के इतिहास के लिए मील का पत्थर बन गया।

17/30 अंतर्राष्ट्रीय मानदंडो और संस्थाओं को मजबूती प्रदान के लिए भारत ने अंतर्राष्ट्रीय फलक पर गुटनिरपेक्ष आंदोलन की शुरुआत की और संयुक्त राष्ट्रसंघ जैसे अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों को भी बढ़ावा दिया। गुटनिरपेक्ष आंदोलन के द्वारा भारत विश्व के साथ जुड़ा व दोनों महाशक्तियों से सहायता हासिल कर सका तथा संयुक्त राष्ट्रसंघ में योगदान से भारत ने अपने सुरक्षा हितों की रक्षा की। भारत सुरक्षा हितों का मुद्दा सुरक्षा परिषद में भी पेश कर सकता है।

18/30 केंद्र में गठबंधन का दौर 1989 के बाद से शुरु

शुरु हुआ। 1989 में पहली गठबंधन सरकार राष्ट्रीय मोर्चे की बनी।

केंद्र में गठबंधन सरकार के दो लाभ निम्न हैं -

(i) गठबंधन सरकार में विभिन्न गुट शामिल होने के कारण विचारों में विभिन्नताएं होती है, जो अच्छे व जनता के हितैषी निर्णय लेती है।

(ii) गठबंधन सरकारें लंबे समय तक शासन व्यवस्था को सुचारु रूप से चला सकती है ~~क्योंकि~~ क्योंकि इनके सभी गुट सत्ता में हिस्सेदारी के लिए शामिल होते हैं।

खण्ड - ग

19. उ० 1947 में भारत - पाक विभाजन से पूर्वी पाकिस्तान व पश्चिमी पाकिस्तान का जन्म हुआ। शुरुआती वर्षों में पश्चिमी पाकिस्तान की सरकार ने पूर्वी पाकिस्तान पर शासन किया। 1971 में

बांग्लादेश को युद्ध की ओर ले जाने वाली परिस्थितियाँ निम्नलिखित हैं :-

(i) 1970 में पश्चिमी व पूर्वी पाकिस्तान में चुनाव हुए तथा पूर्वी पाकिस्तान में अवामी लीग के नेता 'शेख मुजीबउर्रहमान' ने सभी सीटों पर विजय प्राप्त की, शेख मुजीब ने पूर्वी पाकिस्तान के लिए अधिक स्वायत्तता की माँग की।

(ii) जुल्फिकार अली भुट्टो के नेतृत्व में पश्चिमी पाकिस्तान की सरकार ने उनकी माँग को खारीज कर दिया।

(iii) भुट्टो ने पूर्वी पाकिस्तान पर दबदबा बनाए रखने के लिए दमन की शुरुआत की।

(iv) ऐसे में पूर्वी पाकिस्तान वर्तमान बांग्लादेश ने भारत से मदद माँगी व भारत - पाक के बीच दिसंबर 1971 में बांग्लादेश की स्वतंत्रता के लिए युद्ध हुआ।

(v) युद्ध में पाकिस्तानी सेना के 90000 सैनिको ने आत्म-समर्पण कर दिया तथा 1971 में 'बांग्लादेश' नामक नए देश का उदय हुआ।

P.T.O

उ० 30. सोवियत संघ का जन्म 1917 में हुई बोल्शेविक क्रांति के बाद हुआ तथा इसका विघटन Dec. 1991 में हुआ।

सोवियत संघ के विघटन के कारण निम्न थे :-

(i) एक पार्टी का शासन :- सोवियत संघ में एक पार्टी का ही दबदबा था, सोवियत संघ पर 'कम्युनिस्ट पार्टी' के शासन के दौरान लोगों की आकांक्षाओं को पूरा नहीं किया जा रहा था। वहाँ पर नौकरशाही का शिकंजा कसता चला गया। पार्टी के नेताओं को आम जनता से ज्यादा अधिकार प्राप्त थे। इसी कारण सोवियत संघ का विघन हुआ।

(ii) राष्ट्रीय भावनाओं का उदय :- यह सोवियत संघ के विघटन का तात्कालिक व सबसे महत्वपूर्ण कारण रहा। 1985 के बाद से राष्ट्रो में राष्ट्रीय भावनाओं का उदय होने लगा। ये भावनाएं बाल्टिक गणराज्यों –

(लिथुआनिया, लताविया व एस्तोनिया) में ज्यादा प्रबल थी। सबसे पहले मार्च 1990 में लिथुआनिया ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा की।

Q. -(ख)

उ० भारत और चीन के संबंध 1950 में तिब्बत के चीन में विलय के बाद बिगड़ने शुरू हुए। भारत व चीन के बीच सीमा-विवाद अक्साई-चीन व अरुणाचल-सीमा को लेकर है। सीमा-विवाद के चलते 1962 में भारत-चीन के बीच युद्ध भी हुआ।

भारत-चीन संबंधों को सुधारने के उपाय निम्नलिखित हैं :-

(i) दोनों राष्ट्रों के बीच व्यापार को बढ़ावा देना :- भारत-चीन दोनों विश्व की महाशक्तियाँ बन सकती है। दोनों देश अपना विकास जोर-शोर से कर रहे हैं। ऐसे में दोनों राष्ट्रों के संबंधों को सुधारने के लिए व्यापार

P.T.O

माध्यम बन सकता है।

(ii) दोनों राष्ट्रों के बीच वार्ता-श्रृंखला कायम रखना — दोनों ही राष्ट्रों के बीच वार्ता-श्रृंखला कायम रखने से संबंधों की खटास कम हो सकती है तथा संबंध मैत्रीपूर्ण हो सकते हैं।

भारत-चीन संबंधों को सुधारने के लिए आवश्यक है कि दोनों राष्ट्र मिलकर इन समस्याओं का समाधान करें।

(ख) वैश्वीकरण — "वैश्वीकरण से अभिप्राय वस्तुओं, सूचनाओं, पूँजी के निरंतर प्रवाह से है।"

किसी भी राष्ट्र को वैश्वीकरण सकारात्मक व नकारात्मक दोनों तरह से प्रभावित करता है।

वैश्वीकरण के सकारात्मक प्रभाव निम्नलिखित हैं:-

(i) राष्ट्र का आर्थिक विकास होता है:- वैश्वीकरण किसी भी देश की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है। वैश्वीकरण से राष्ट्र का आर्थिक विकास होता है। यह देश की अर्थव्यवस्था को विकसित करता है। इससे किसी भी राष्ट्र को विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है तथा उसकी अर्थव्यवस्था विकसित होती है।

(ii) बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा निवेश:- वैश्वीकरण के चलते विकसित राष्ट्र विकासशील राष्ट्रों में निवेश करने लगे हैं। इसी से विकासशील राष्ट्र की अर्थव्यवस्था विकसित होती है; रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं। अन्य घरेलू उद्योगों को प्रतिस्पर्धा मिल जाता है जिससे तैयार माल की गुणवत्ता अच्छी होती है।

निष्कर्ष:- वैश्वीकरण किसी भी राष्ट्र के आर्थिक विकास में सहायक है।

Previous Pathshala

23
उ०

" क्षेत्रीय आकांक्षाओं से निपटने का सबसे अच्छा तरीका दमन के बजाय लोकतांत्रिक ढंग से बातचीत करना है" - यह कथन सत्य है। भारत के अनेक राज्यों में 1980 के दशक में क्षेत्रीय आकांक्षाओं का उभार हुआ, जिसे में भारत सरकार ने लोकतांत्रिक दृष्टिकोण अपनाया।

कथन के पक्ष में उदाहरण - मिजोरम राज्य ने असम से अलगाव की माँग की, लालडेंगा के नेतृत्व में मिजो नेशनल फ्रंट की स्थापना की गई। मिजोरम में सरकार के विरुद्ध संघर्ष शुरु हो गए सरकार ने दमन की नीति अपनाई व 20 साल तक गुरिल्ला युद्ध चला। अंत में लोकतांत्रिक दृष्टिकोण अपनाते हुए राजीव गाँधी ने 1986 में लालडेंगा से बातचीत शुरु की व एक समझौते के तहत मिजोरम को अलग राज्य का दर्जा मिला। आज मिजोरम सबसे शांतिपूर्ण राज्य है।

Previous Pathshala

अत: उदाहरण से स्पष्ट है कि क्षेत्रीय आकांक्षाओं से निपटने का सबसे आसान तरीका दमन के बजाय लोकतांत्रिक ढंग से बातचीत करना है।

खण्ड - ब

24

(i) ⇒ (c) अगस्त 2002

(ii) ⇒ (d) ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में उनका योगदान नाममात्र था।

(iii) ⇒ (b) रियो डी जेनेरियो

(iv) ⇒ (c) बाहरी अंतरिक्ष

P.T.O

Previous Pathshala

25. Map based –

30

प्रयोग की गई जानकारी की क्रम संख्या	मानचित्र में दिया गया संबंधित राज्य	राज्य का नाम
(i)	(B)	उत्तर प्रदेश
(ii)	(A)	कर्नाटक
(iii)	(D)	तमिलनाडु
(iv)	(C)	राजस्थान

26.

(i) इंदिरा गाँधी

⇒

(ii) → चौधरी ~~चरण~~ सिंह और मोरारजी देसाई

(iii) → 1980 में जनता पार्टी की हार के दो कारण निम्न हैं :-

(i) जनता पार्टी का कोई निश्चित ढाँचा, प्रणाली अथवा कार्यक्रम नहीं था।

(ii) जनता पार्टी में गठबंधन पार्टियों के बीच तालमेल नहीं था।

खण्ड - ड

27 (क) यूरोपीय संघ :-

यह यूरोप के 27 देशों का एक संघ है जिसका गठन 1992 में हुआ। इसका गठन सोवियत संघ के विघटन के पश्चात हुआ।

मुख्यालय - ब्रुसेल्स (बेल्जियम)

P.T.O

Previous Pathshala

वर्तमान में यूरोपीय संघ एक प्रभावशाली क्षेत्रीय संगठन के रूप में उभरा है। यूरोपीय संघ को प्रभावशाली बनाने वाले कारक निम्नलिखित हैं :-

(i) सैन्य शक्ति :- यूरोपीय संघ के पास विश्व की दूसरी सबसे बड़ी सेना है। यूरोपीय संघ अपने कुल बजट का एक बड़ा भाग (1%) सेना पर खर्च करता है।

(ii) आर्थिक ताकत :- यूरोपीय संघ आर्थिक रूप से भी विकसित है, इसकी मुद्रा 'यूरो' अमेरिकी वर्चस्व के लिए खतरा बन सकती है। यूरोपीय संघ संयुक्त राष्ट्रसंघ के बजट का दूसरा सबसे बड़ा हिस्सेदार है।

(iii) परमाणु शक्ति :- यूरोपीय संघ को दो राष्ट्र फ्रांस और

ब्रिटेन सुरक्षा परिषद के स्थाई सदस्य है, वर्तमान में ब्रिटेन यूरोपीय संघ का हिस्सा नहीं है, यूरोपीय संघ के जाखिरे में 330 परमाणु हथियार है। यह विश्व मे शक्ति संपन्न क्षेत्रीय संगठन है।

(iv) राजनीतिक प्रभाव :- यूरोपीय संघ का राजनीतिक प्रभाव पूरे यूरोप में फैला हुआ है। साथ ही एशिया, अमेरिका के राष्ट्रों के साथ भी इसके संबंध अच्छे हैं।

इन्हीं कारणों से यूरोपीय संघ एक प्रभावशाली क्षेत्रीय संगठन बना हुआ है। यूरोपीय संघ वर्तमान में सत्ता का एक वैकल्पिक केन्द्र है। यह अमेरिकी वर्चस्व को भी टक्कर दे सकता है।

28.(क) उ० संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में वर्तमान में 15 सदस्य है, जिनमें से 5 स्थाई व 10 अस्थायी सदस्य हैं। वर्तमान में भारत भी सुरक्षा परिषद मे स्थायी सदस्यता

P.T.O

प्राप्त करने का दावा कर रहा है।

★ स्थायी सदस्यता प्राप्त करने के आधार निम्न हैं :-

(i) बड़ी सैन्य शक्ति

(ii) विशाल आबादी राष्ट्र

(iii) विशाल अर्थव्यवस्था

(iv) वह राष्ट्र लोकतांत्रिक होना चाहिए, साथ ही विनिश्चताओं का पालन करने वाला होना चाहिए।

(v) संयुक्त राष्ट्र के बजट में हिस्सेदारी ज्यादा होनी चाहिए।

⇒ भारत स्थायी सदस्यता के लिए दावा करता है क्योंकि भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है, भारत के पास इतनी विशाल सेना है, भारत की अर्थव्यवस्था भी विशाल है तथा भारत दुनिया का सबसे ज्यादा आबादी (145 करोड़) वाला राष्ट्र है। भारत का संयुक्त राष्ट्रसंघ के बजट में भी हिस्सा है। भारत का हिस्सा लगभग 2% है।

Previous Pathshala

इन्हीं आधारों पर भारत स्थायी सदस्यता प्राप्ति का दावा करता है।

निष्कर्ष :- भारत का स्थायी सदस्यता का दावा सही है। भारत का मत है कि सुरक्षा परिषद के स्थायी व अस्थायी दोनों सदस्यों की संख्या बढ़नी चाहिए।
भारत की स्थायी सदस्यता प्राप्ति की राह में चीन है। चीन नहीं चाहता कि भारत को वीटो का अधिकार प्राप्त हो सके।
परन्तु भारत का स्थायी सदस्यता प्राप्ति का दावा दिए गए आधारों के अनुसार उचित है। कोई भी राष्ट्र जो इन माँगों को पूरा करता है वह स्थायी सदस्यता का भागीदार है।

29 (ख)

उ० हैदराबाद के विलय का घटनाक्रम निम्नलिखित हैं :-

(i) 1947 तक हैदराबाद भारत की एक विशाल रियासत हुआ

P.T.O

करता था। हैदराबाद के निजाम स्वतंत्र रहना चाहते थे, वे हैदराबाद के भारत में विलय के विरुद्ध थे।

(ii) 1948 में सरकार ने एक वर्ष के सहमति-पत्र पर निजाम के हस्ताक्षर करवाए।

(iii) जनता में निजाम के खिलाफ आक्रोश फैल गया। ऐसे में निजाम ने एक अर्द्ध-सैनिक बल जिसे 'रजाकार' कहा जाता था, को रवाना किया।

(iv) रजाकारों ने जनता का शोषण करना शुरू कर दिया था, उन्होंने महिलाओं के साथ बलात्कार, जबरन विवाह आदि किया।

(v) ऐसे में हैदराबाद की जनता को निजाम से मुक्त करवाने के लिए योजना बनाई गई।

(vi) भारत सरकार ने सितंबर 1948 में हैदराबाद में सैनिक ~~टुकडि~~ टुकड़ी भेजी। उन्होंने हैदराबाद की जनता को निजाम से मुक्त करवाया।

Previous Pathshala

(vii) Operation polo - 1948 के द्वारा हैदराबाद को मुक्त करवाया गया।

(viii) Sept. 1948 मे हैदराबाद का भारत मे विलय हो गया।

इसी प्रकार हैदराबाद रियासत का भारत मे विलय हुआ। अन्य अनेक रियासतो मणिपुर, जुनागढ, सिक्किम व गोवा का भी विलय भारत मे कर लिया गया।
हैदराबाद के भारत मे विलय के पश्चात हैदराबाद मे शांति बहाल हुई तथा निजाम को गिरफ्तार कर लिया गया।

30
(30) ए: भारतीय राजनीति मे 1989 के बाद अनेक बदलाव आए। 1989 के साल को कांग्रेस के दमन और गठबंधन सरकार के उदय के रूप मे देखा जाता है। 1989 और उसके बाद भारतीय राजनीति मे निम्नलिखित

P.T.O

घटनाएँ घटी थी :-

(i) कांग्रेस की हार :- 1989 के चुनावों में कांग्रेस की हार हुई व 'राष्ट्रीय मोर्चे' की गठबंधन सरकार बनी। 1989 के बाद से गठबंधन का दौर शुरू हुआ।

→ राष्ट्रीय मोर्चा - जनता दल + वाम मोर्चा + भाजपा की मिली-जुली सरकार थी।

(ii) मंडल मुद्दे का उदय :- 1989 के बाद मंडल मुद्दे का उदय हुआ। मंडल कमीशन की सिफारिशों को लागू करने से जो आक्रोश फैला उसे 'मंडल मुद्दा' कहते हैं। 1990 में सिफारिशों को लागू करने के उपरांत मंडल मुद्दे का उदय हुआ।

(iii) बाबरी मस्जिद :- 1991 में [इलाहाबाद] फैजाबाद उच्च न्यायालय ने

बाबरी मस्जिद के अहाते का ताला खोलने की बात कही ताकि हिंदू वहाँ पूजा कर सके। 1992 में हिंदू कारसेवकों ने बाबरी मस्जिद को तोड़ दिया इसके बाद U.P, दिल्ली, गुजरात, बंगाल में दंगे हुए।

(iv) राजीव गाँधी की मृत्यु :-

21 मई 1992 को तमिलनाडु यात्रा के दौरान राजीव गाँधी की हत्या कर दी। उनकी हत्या तमिल व्यक्ति ने की थी वह श्रीलंका में तमिलों के साथ हुए बर्ताव का बदला लेना चाहता था।

निष्कर्ष :- भारतीय राजनीति 1989 के बाद पूर्णतया बदल चुकी थी, नई आर्थिक नीति की शुरुआत, मंडल कमीशन की सिफारिशें आदि प्रमुख राजनीतिक घटनाएँ थी। 1989 के बाद से गठबंधन सरकारों का दौर चला और कोई भी पूर्ण बहुमत की सरकार नहीं बनी।